इकाई 17 पुस्तकों और पत्र–पत्रिकाओं की समीक्षा

इकाई की रूपरेखा

17.0 उद्देश्य

17.1 प्रस्तावना

17.2 पुस्तक समीक्षा का अभिप्राय

- 17.2.1 पुस्तक समीक्षा और आलोचना में अंतर
- 17.2.2 पुस्तक समीक्षा का महत्व

17.3 पुस्तक समीक्षा के विभिन्न पक्ष

- 17.3.1 पुस्तक का परिचय
- 17.3.2 विषय का महत्व
- 17.3.3 आलोचनात्मक मूल्यांकन
- 17.3.4 प्रकाशन संबंधी सूचनाएँ

17.4 एक अच्छे समीक्षक के गुण

- 17.4.1 विशेषज्ञता
- 17.4.2 विस्तृत सामान्य ज्ञान
- 174.3 पूर्वाग्रहमुक्तता
- 17.4.4 दृष्टि–सम्पन्नता
- 17.4.5 वस्तुनिष्ठता
- 17.4.6 संतुलित लेखन
- 17.4.7 सामाजिक दायित्व बोध

17.5 पुस्तक समीक्षा की विशेषताएँ

- 17.5.1 वस्तुनिष्ठता
- 17.5.2 पूर्वाग्रहमुक्तता
- 17.5.3 प्रासंगिकता
- 17.5.4 केंद्रीय बिंदु की पहचान
- 17.5.5 सोद्देश्यता
- 17.5.6 निजता
- 17.5.7 भाषा और शैलीगत विशेषताएँ

17.6 पत्र–पत्रिकाओं की समीक्षा

17.7 सारांश

17.8 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

17.0 उद्देश्य

फीचर लेखन के चौथे खंड की यह पहली इकाई है। इस इकाई में आप पुस्तकों और पत्र–पत्रिकाओं की समीक्षा की विशेषताओं से परिचित हो सकेंगे। इसे पढ़ने के बाद आप :

- पुस्तक समीक्षा का अभिप्राय समझा सकेंगी/सकेंगे;
- पुस्तक समीक्षा के विभिन्न पक्षों का विश्लेषण कर सकेंगी/सकेंगे;
- एक अच्छे समीक्षक के गुणों पर प्रकाश डाल सकेंगी/सकेंगे;
- पुस्तक समीक्षा की विशेषताओं का उल्लेख कर सकेंगी/सकेंगे और
- पत्र–पत्रिकाओं की समीक्षा की विशेषताओं को रेखांकित कर सकेंगी/सकेंगे।

17.1 प्रस्तावना

फीचर लेखन पाठ्यक्रम की यह इकाई पुस्तक और पत्र–पत्रिकाओं की समीक्षा लेखन से संबंधित है। इस इकाई में समीक्षा लेखन के विभिन्न पक्षों और विशेषताओं का परिचय दिया गया है।

समीक्षा लेखन में सक्रिय होने के पूर्व किसी भी नये समीक्षक के लिए वह समीक्षा के विभिन्न पक्षों की जानकारी प्राप्त कर लें। इसी उद्देश्य से सबसे पहले समीक्षा का अर्थ स्पष्ट किया गया है। 'समीक्षा' और 'आलोचना' पदों को लेकर विद्वानों में भी पर्याप्त मतभेद है। विवादों में पड़े बिना इतना समझना जरूरी है कि समीक्षा का अर्थ पुस्तक के कथ्य और शैली का विश्लेषण है और आलोचना का दायरा पुस्तक समीक्षा से विस्तृत है। एक अच्छा समीक्षक बनने के लिए समीक्षक के गुण और समीक्षा की विशेषताओं की जानकारी अवश्य होनी चाहिए। इस दृष्टि से इस इकाई में कुछ मुद्दों की चर्चा की गयी है। आप इन विशेषताओं को ध्यान में रखकर समीक्षा के क्षेत्र में कदम रख सकते हैं।

आप ज्यादा से ज्यादा समीक्षाएं पढ़ें और अच्छी समीक्षा और साधारण समीक्षा में अंतर स्पष्ट करें। आम तौर पर सभी पत्र–पत्रिकाओं और कई समाचार पत्रों में पुस्तक समीक्षा का स्तंभ होती है। हिन्दी में एक–दो पत्रिकाएं ऐसी भी हैं जो पुस्तक समीक्षाएँ प्रमुखता से प्रकाशित करती हैं। इसके अलावा पत्र–पत्रिकाओं की समीक्षाएँ भी प्रकाशित होती हैं। हम उनकी भी चर्चा करेंगे।

17.2 पुस्तक समीक्षा का अभिप्राय

समीक्षा का शब्दिक अर्थ है : सम्यक् अवलोकन, सम्मति, अन्वेषण आदि। पुस्तक समीक्षा में किसी पुस्तक का सम्यक् विश्लेषण किया जाता है। इस विश्लेषण से पाठक को पुस्तक विशेष के विभिन्न पहलुओं की जानकारी मिलती है। पुस्तक समीक्षा में एक पुस्तक की पूरी छानबीन की जाती है। समीक्षक पाठक को पुस्तक से परिचित कराता है। इस क्रम में वह पुस्तक के लेखक, विषय वस्तु, शिल्प, प्रकाशन स्तर आदि पर प्रकाश डालता जाता है। इसके साथ ही वह समग्र रूप में पुस्तक का आलोचनात्मक मूल्यांकन भी करता है। इस प्रकार पुस्तक विशेष के संबंध में समीक्षक अपनी राय भी व्यक्त करता है।

पुस्तक समीक्षा का पहला और प्राथमिक दायित्व पाठकों को पुस्तक से परिचित कराना है। लेकिन परिचय का अर्थ पुस्तक की विषयवस्तु का सारांश भर देना नहीं है निश्चय ही पुस्तक की विषयवस्तु के बारे में जानने की उत्सुकता ही पाठक को पुस्तक समीक्षा पढ़ने के लिए प्रेरित करती है परंतु यह भी सही है कि वह समीक्षा के द्वारा पुस्तक की विषयवस्तु, संरचना और भाषिक सर्जनात्मकता के संबंध में समीक्षक की विशेषज्ञतापूर्ण राय जानना चाहता है। वह समीक्षक से विश्लेषण और आलोचनात्मक विवेचन की भी अपेक्षा करता है। इसलिए समीक्षा लिखते समय समीक्षक को सतर्क रहना चाहिए कि उसकी समीक्षा पुस्तक का सारांश मात्र बनकर न रह जाए।

17.2.1 पुस्तक समीक्षा और आलोचना में अंतर

समीक्षा और आलोचना को आम तौर पर एक समझ लिया जाता है। लेकिन यहाँ हम इन्हें दो भिन्न अर्थों में प्रयुक्त कर रहे हैं। समीक्षा, जिसे अंग्रेजी में रिव्यू (Review) कहा जाता है, का प्रयोग पुस्तक समीक्षा (Book review) के अर्थ में किया गया है जबकि आलोचना (criticism) अधिक व्यापक अर्थ वाला शब्द है।

वस्तुतः समीक्षा आलोचना विधा की एक शाखा या उपशाखा है। समीक्षा का तात्पर्य पुस्तक समीक्षा से है। निश्चित रूप से वह आलोचना के दायरे में आती है पर आलोचना के दायरे में और भी बहुत कुछ आता है, जैसे किसी विधा, लेखक, प्रवृत्ति आदि का मूल्यांकन। पुस्तक समीक्षा में पुस्तक केन्द्र में होती है और आलोचना में विधा, लेखक और प्रवृत्ति भी केन्द्र में हो सकती हैं। लेकिन ऐसा नहीं है कि पुस्तक समीक्षा में विधा, लेखक और प्रवृत्ति की चर्चा नहीं होती या आलोचना में किसी पुस्तक की चर्चा नहीं होती, होती है पर संदर्भ के रूप में किसी पुस्तक पर समीक्षा लिखते समय समीक्षक उस धारा या प्रवृत्ति और उस क्षेत्र के समकालीन लेखकीय रूझान की चर्चा करता है या कर सकता है, पर चर्चा के केन्द्र में वह पुस्तक ही रहेगी। इसी प्रकार किसी विषय विशेष पर विचार करते समय आलोचक विभिन्न पुस्तकों का संदर्भ के तौर पर उल्लेख कर सकता है, उन पर अपनी राय व्यक्त कर सकता है, पर केन्द्र में वह विषय विशेष ही रहेगा न कि कोई पुस्तक। मसलन, अगर कोई लेखक भीष्म साहनी के उपन्यास 'मय्यादास की माड़ी' का विश्लेषण करता है, तो यह पुस्तक समीक्षा का उदाहरण होगा, और कोई साहित्यकार भीष्म साहनी के उपन्यास शिल्प का विश्लेषण करता है और इसके लिए वह संदर्भ के तौर पर 'तमस' और 'मय्यादास की माड़ी' का उपयोग करता है तो वह आलोचना का उदाहरण होगा।

कभी–कभी पुस्तक समीक्षा आलोचना के दायरे में प्रवेश कर जाती है। जब पुस्तक समीक्षक पुस्तक के बहाने उस लेखक के संपूर्ण लेखन या पुस्तक के विषय को आधार बनाकर एक स्वतंत्र लेख लिख दे। उदाहरण के लिए जवाहरलाल नेहरू की पुस्तक 'भारत की खोज' के प्रसिद्ध इतिहासविद् दामोदर धर्मानंद कोसंबी द्वारा लिखित समीक्षा को सिर्फ पुस्तक समीक्षा नहीं कहा जा सकता। वह एक स्वंतत्र लेख की तरह महत्वपूर्ण है। इस प्रकार के आलोचनात्मक मूल्यांकन के माध्यम से लेखक पुस्तक समीक्षा करते हुए कुछ ऐसी महत्वपूर्ण स्थापनाएँ कर जाता है जो पुस्तक से अलग भी अपना महत्व रखती हैं। साहित्यिक विषयों पर लिखी गयी समीक्षाओं में भी इसकी संभावना रहती है कि समीक्षक पुस्तक के बहाने रचनाकार के संपूर्ण लेखन या किसी खास प्रवृत्ति या उसकी भाषिक और शैलीगत विशेषताओं का ऐसा मूल्यांकन प्रस्तुत करें जो उस 'समीक्षा' को आलोचना के दायरे में पहुँचा दे।

अब तक आप एक बात समझ गये होगें कि आलोचना का क्षेत्र समीक्षा से व्यापक होता है। यहाँ व्यापकता का अर्थ क्षेत्र विस्तार से नहीं, बल्कि विश्लेषण की व्यापकता से है। समीक्षा का दायरा छोटा होता हैं, उसमें विश्लेषण किसी पुस्तक तक सीमित रहता है। यह विश्लेषण ही समीक्षा और आलोचना को एक दूसरे से जोड़ता है। दोनों में शोध–प्रवृत्ति भी होती है। किसी पुस्तक की समीक्षा करते समय समीक्षक तथ्यों की गहरी छानबीन करता है। आलोचना में खोजबीन का यह दायरा और भी बड़ा और मूल्य–आधारित हो जाता है।

वस्तुतः समीक्षा और आलोचना एक दूसरे से जुड़े अवश्य हैं पर एक नहीं है। समीक्षा आलोचना का एक अंग है पर उसका अपना अस्तित्व है, एक अलग पहचान है। इसलिए आलोचना और समीक्षा को एक दूसरे का पर्याय नहीं समझना चाहिए।

17.2.2 पुस्तक समीक्षा का महत्व

अब सवाल यह उठता है कि पुस्तक समीक्षा क्यों? इसका उद्देश्य क्या है? ऐसे कुछ सवाल आपके दिमाग में पनप रहे होंगें। आइए, इन सवालों का हल ढूँढ़ा जाए।

दरअसल, साहित्य में पुस्तक समीक्षा की अहम भूमिका है। समीक्षा पाठक और पुस्तक को एक दूसरे से जोड़ती है। पाठक के सामने बराबर यह समस्या रहती है कि वह कौन सी किताब पढ़े। उसके इस सवाल का समाधान पुस्तक समीक्षा कर देती है। इसके अलावा पाठक वर्ग का एक हिस्सा ऐसा भी होता है जो पूरी किताब नहीं पढ़ना चाहता या उसके पास इतना समय नहीं है कि वह सभी पुस्तकों को पढ़े। यहाँ समीक्षा उसकी मदद करती है। इस प्रकार एक बार में पुस्तक को ढेर सारे पाठकों तक पहुचाँ देती है। इसके दो फायदे होते हैं। एक तो पाठक को प्रकाशित होने वाली पुस्तकों की जानकारी मिलती रहती है, दूसरे वह नये लेखकीय रूझानों से भी परिचित होता चलता है। साहित्य, संस्कृति, विज्ञान, समाज विज्ञान, खेलकूद आदि क्षेत्रों से सम्बद्ध पुस्तकों की जानकारी समीक्षा के माध्यम से पाठकों तक पहुचँती है।

पुस्तकों के इस व्यापक संसार में पाठक के लिए सही पुस्तक का चुनाव मुश्किल काम है। समीक्षा इस मुश्किल को कम करती है। इसके अतिरिक्त वह लेखक को पाठक से जोड़ने का सामाजिक दायित्व भी निभाती है। साथ ही इसकी मदद से पाठक किसी लेखक या कृति के बारे में अपनी समझ विकसित कर सकता है और अपनी राय बना सकता है।

बोध प्रश्न–1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) पुस्तक समीक्षा से आप क्या समझते हैं? दो पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

....

2) पुस्तक समीक्षा और आलोचना में क्या अंतर हैं? (सही उत्तर के सामने (√) का निशान लगाइए)

   क) पुस्तक समीक्षा में सिर्फ पुस्तक का सारांश और आलोचना में आलोचनात्मक दृष्टि अपनाया जाता है। ( )

   ख) पुस्तक समीक्षा में पुस्तक केंद्र में होती है और आलोचना में पुस्तक का संदर्भ के रूप में उपयोग किया जाता है। ( )

   ग) पुस्तक समीक्षा और आलोचना में कोई अंतर नहीं है। ( )

   घ) आलोचना का दायरा पुस्तक समीक्षा की अपेक्षा व्यापक होता है। ( )

3) पुस्तक समीक्षा का क्या महत्व है? (पाँच पंक्तियों में उत्तर दें)

....

....

....

....

....

17.3 पुस्तक समीक्षा के विभिन्न पक्ष

अब तक के विश्लेषण से आप पुस्तक समीक्षा के विभिन्न संकेत पा चुके हैं, मसलन, पुस्तक का परिचय, विषय का प्रतिपादन और आलोचनात्मक मूल्यांकन। कुल मिलाकर पुस्तक समीक्षा इन्हीं पक्षों को समेट कर चलती है। समीक्षक पाठकों को पुस्तक से परिचित कराता है, उसमें वर्णित विषय पर प्रकाश डालता है और उसका आलोचनात्मक मूल्यांकन करता है। समीक्षा में पुस्तक के प्रकाशन से संबंधित सूचनाएं भी दी जाती हैं। आइए, इन पर अलग–अलग विचार करें।

17.3.1 पुस्तक का परिचय

पुस्तक का सही परिचय प्रस्तुत करना समीक्षक का मुख्य दायित्व है। समीक्षा लिखते समय आरंम्भ में पुस्तक की सामान्य जानकारी पाठक को देनी चाहिए। सामान्य जानकारी का तात्पर्य है पुस्तक की विधा, उसकी विषय वस्तु के बारे में बताना, पुस्तक कब लिखी गई और उसका महत्त्व क्या है और विधा का भी उल्लेख करना। इस तरह की जानकारी से पाठक को यह तय करने में सुविधा रहती है कि प्रस्तुत पुस्तक उसकी अभिरुचि के अनुकूल है या नहीं। इस प्रारंभिक परिचय से ही वह समीक्षा पढ़ने की ओर प्रवृत्त होता है। निम्नलिखित उदाहरण पुस्तक समीक्षा के परिचयात्मक अंश को उजागर करता है।

'जहालत के पचास वर्ष'

प्रसिद्ध उपन्यास 'राग दरबारी' के रचयिता श्रीलाल शुक्ल व्यंग्य–लेखन में माहिर माने जाते हैं। उनकी तमाम रचनाओं में व्यंग्य अलग–अलग रूपों में, अलग–अलग तेवरों में और तीखेपन के साथ मौजूद है। 'जहालत के पचास वर्ष' श्रीलाल शुक्ल के अब तक के समग्र व्यंग्य लेखों का संग्रह है। यह आजाद भारत के सांस्कृतिक, धार्मिक,

राजनीतिक और आर्थिक विकास का एक ऐसा एलबम है जहां भारतीय जीवन की कमजोरियों और अंतर्विरोधों को दिखाया गया है।

श्रीलाल शुक्ल प्रगतिशील, धर्मनिरपेक्ष, उदारवादी और राष्ट्र के अधोपतन से चिंतित विचारक के रूप में सामने आते हैं। राष्ट्र के प्रति उनकी चिंता हर निबंध में मुखर है। ये रचनाएं इतनी तीखी और नुकीली हैं कि अपने गिरेबान में झांककर देखने को विवश करती हैं। लेखक खुद सफेद कॉलर वाला व्यक्ति रहा है और भारतीय नौकरशाही का अंग होने के कारण उसकी रग–रग से परिचित है। सफेद कॉलर वालों की नौकरशाही पर चोट कर सबसे अधिक कुठाराघात उन्होंने अपनों पर ही किया है। 'मम्मी जी का गधा' न केवल मध्यवर्ग के चरित्र को उजागर करता है, बल्कि भूमंडलीकरण, उदारीकरण, और बाजारवाद पर भी उंगली उठाता है। उनके मारक घेरे में मध्यवर्ग के साथ–साथ नौकरशाह भी आते हैं और इन दोनों पर चोट करते समय लेखक तनिक भी कंजूसी नहीं बरतता है।

श्रीलाल जी की वे रचनाएं ज्यादा अपील करती हैं जिनमें लेखक समाज की विद्रूपता और अंतर्विरोध को उभारने में सफल हुआ है। उनकी रचनाएं केवल भावनात्मक आवेश और मानसिक–शाब्दिक ऊहापोह और क्रीड़ा से नहीं उपजी हैं, बल्कि वे रचना और रचनाकार के आंतरिक संघर्ष और द्वंद्व का प्रतिफलन हैं। यही व्यंग्य की शक्ति है, यही श्रीलाल शुक्ल की विशिष्टता है, यही 'जहालत के पचास वर्ष की ऊर्जा और संजीवनी है।'

उपर्युक्त अंशों में पुस्तक का परिचय प्रस्तुत किया गया है। इनके लेखन और प्रस्तुति ढंग अलग–अलग हो सकते हैं, पर चार बातें कमोबेश पूरी समीक्षा में दृष्टिगोचर होती हैं। ये हैं –

- पुस्तक का सामान्य परिचय
- लेखक का संक्षिप्त परिचय
- लेखक के पहले की पुस्तकों का उल्लेख
- पुस्तक की विषय वस्तु का संकेत।

उपर्युक्त चारों बातों से पाठक को लेखक, उसके रचनात्मक क्षेत्र, पुस्तक के विषय और उसकी विधा का परिचय मिल जाता है। इस परिचय से प्रेरित होकर वह पुस्तक समीक्षा को आगे पढ़ना जारी रखता है। स्पष्ट है कि पुस्तक समीक्षा पुस्तक के परिचय पर समाप्त नहीं होती बल्कि उससे आरंभ होती है। वास्तविक समीक्षा तो इसके बाद आती हैं। पाठक समीक्षा पढ़ें, इसके लिए आवश्यक है कि आरंभ आर्कषक हो और बिना किसी लफ्फाजी के सीधी बात कहें।

17.3.2 विषय का महत्व

पुस्तक का सामान्य परिचय प्राप्त कर लेने के बाद पाठक पुस्तक की विषयवस्तु या कथ्य से परिचित होना चाहता है। जानना चाहता है कि पुस्तक का संबंध ज्ञान के किस क्षेत्र से है। मसलन साहित्य, कला, संस्कृति, विज्ञान, इतिहास, राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र, खेल–कूद आदि। विषय के परिचय के साथ उसकी प्रस्तुति की शैली की भी जानकारी आवश्यक है। अर्थात पुस्तक निबंधात्मक, आत्मकथात्मक, डायरी, उपन्यास, कहानी, प्रश्नोत्तर आदि में लिखी गई है।

तीसरी जानकारी यह आवश्यक है कि लेखक ने यह पुस्तक किस पाठक वर्ग के लिए लिखी है। यह जानना इसलिए आवश्यक है कि पाठक वर्ग की भिन्नता एक ही विषय पर लिखी गई पुस्तकों में बहुत बड़ा अंतर ला देती है। यह अंतर विषय की प्रस्तुति से लेकर भाषा के चयन तक में नजर आता है।

उपर्युक्त बातों का उल्लेख करने के साथ ही विषय वस्तु के संबंध में विचार करना चाहिए। यह देखना चाहिए कि पुस्तक की प्रासंगिकता क्या है? दूसरे, पुस्तक में विषय की प्रस्तुति किस रूप में है? क्या लेखक अपनी बात को प्रभावशाली रूप में रखने में सफल रहा है? तीसरे, लेखक ने विषय के किन–किन पक्षों को पेश किया है और ये पक्ष मूल विषय को स्पष्ट करने में कहाँ तक सहायक हुए हैं।

गिरिराज किशोर के उपन्यास 'परिशिष्ट' पर समीक्षा लिखते हुए डॉ. गोपाल ने इसकी विषय वस्तु के महत्व और उसकी प्रासंगिकता को उजागर किया है –

''उदाहरण 'गिरिराज किशोर' ने अपने कथा संसार के केन्द्रीय मंच के रूप में एक आई.आई.टी. संस्थान को चुना है जहाँ अधिकतर उच्च वर्ग और सम्पन्न समाज के छात्र प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर प्रवेश पाते हैं। इनमें से अधिकतर छात्र ऐसे पब्लिक और मिशनरी स्कूलों से आते हैं जहाँ न केवल अंग्रेजी के माध्यम से शिक्षा दी जाती है, वरन् अंग्रेजी उनकी घुट्टी में ही पिला दी जाती है। ये लड़के विलायती रहन–सहन, विलायती रीतिरिवाज, विलायती मैनर्स, विलायती लहजे, विलायती अनुभव आदि के इतने अभ्यस्त हो जाते हैं कि हिन्दी या क्षेत्रीय भाषाओं में बोलने, भारतीय ढंग से अभिवादन करने, भारतीय ढंग से कपड़े पहनने आदि में इन्हें शर्म आती है। इनके बीच अनुसूचित जाति के छात्र अपने आप को अजनबी महसूस करते हैं। उच्च जाति के छात्र बहुमत में तो होते ही हैं, वे दलित छात्रों के प्रति आक्रामक भी होते है। वे उच्चवर्गीय छात्र दलित छात्रों को अवांछित और घुसपैठिया समझते हैं, जैसे मन्दिर के प्रांगण में दो–चार सुअर घुस आये हों। इन पॉश संस्थाओं में रहन–सहन, खानपान, वेशभूषा, बातचीत, वैगरह का ऐसा कृत्रिम ढाँचा बन गया हैं कि भारत का औसत किसान वहाँ पहुँच कर अनुभव करता है कि वह शायद अपने देश में नहीं है। दलित किसान–मजदूर के लिए तो वह दूसरी दुनिया ही है। इन संस्थानों के अधिकतर शिक्षक और उच्चवर्गीय छात्र आरक्षण की व्यवस्था के विरोधी हैं, और वे इसका बदला अल्पसंख्यक दलित छात्रों से जाति मतभेद की नीति अपना कर करते हैं। कक्षाओं में, खेल के मैदान में, मेस में, छात्रावास में, अतिथि भवन में सर्वत्र उच्च वर्गीय छात्र अल्पसंख्यक दलित छात्रों का अपमान करते हैं, डराते धमकाते हैं, और उत्तेजित होने पर मारपीट भी करते हैं। इन संस्थाओं की शिक्षा पद्धति भी इस ढंग की है कि आरक्षण पर आये छात्र सर्वाधिक परीक्षाओं में उर्तीण नहीं हो पाते हैं, वे क्विज, मिड सेमिस्टर, सेमिस्टर और बैक लॉग की दुर्लभ्य दीवारों को लांघ नहीं पाते। सारी पढ़ाई अंग्रेजी में होती है, अंग्रेजी में ही बातचीत होती है, जिससे सामान्य स्कूलों से पढ़ कर आये छात्रों को न केवल पढ़ाई समझने में कठिनाई होती है वरन् फरार्टे से अंग्रजी न बोल सकने के कारण अपमानित भी होना पड़ता है। इस सबका परिणाम यह होता है कि तकनीकी संस्थाओं में एससी एसटी, कोटा के अधिकतर छात्र सफलतापूर्वक अपनी पढ़ाई संपन्न नहीं कर पाते, अनेक छात्र बीच में ही पढ़ाई छोड़ कर भाग जाते हैं और कई तो आत्महत्या तक कर लेते हैं।''

('समीक्षा', वर्ष 18, अंक 4)

17.3.3 आलोचनात्मक मूल्यांकन

किसी पुस्तक का सामान्य परिचय देने और उसकी विषयवस्तु पर प्रकाश डालने के बाद समीक्षक पुस्तक के आलोचनात्मक मूल्यांकन की ओर अग्रसर होता है। यह बात यहाँ ध्यान रखने की है कि आलोचनात्मक मूल्यांकन और परिचय को समीक्षा में अलग–अलग रखा जाए, यह आवश्यक नहीं है। बेहतर यही है कि पुस्तक के परिचय में ही उसका आलोचनात्मक मूल्यांकन भी निहित हो। यह इसलिए जरूरी है कि पुस्तक समीक्षा में इतना अवकाश संभव नहीं होता कि दोनों कार्य स्वतंत्र रूप से किये जा सकें।

किसी पुस्तक का मूल्यांकन समीक्षक को पूर्वाग्रह से मुक्त होकर करना चाहिए। यह पूर्वाग्रह लेखक के प्रति भी हो सकता है और उसके लेखन या विधा के प्रति भी इससे हमेशा बचने की कोशिश करनी चाहिए। किसी पुस्तक का संतुलित मूल्यांकन बहुत कुछ समीक्षक की उस विषय पर पकड़, समझ और दृष्टि संपन्नता पर निर्भर करता है। पुस्तक के मूल्यांकन का काम उत्तरदायित्व पूर्ण होता है, क्योंकि इसके आधार पर पाठक एक राय बनाता है। इस प्रकार इसके माध्यम से समीक्षक एक सामाजिक दायित्व का भी निर्वाह करता है। आइए, कुछ उदाहरण के माध्यम से समीक्षा के आलोचनात्मक पक्ष पर नजर डालें।

गिरिराज किशोर के उपन्यास 'परिशिष्ट' पर डॉ. गोपाल की समीक्षा के कुछ अंशों का आपने अवलोकन किया है। यहाँ समीक्षा का जो अंश प्रस्तुत किया जा रहा है, वह पुस्तक के आलोचनात्मक मूल्यांकन से सम्बद्ध है –

''इसमें सन्देह नहीं कि इस उपन्यास के मूल में एक समस्या है। इस समस्या की भयावहता का बोध कराने के लिए ही उपन्यास लिखा गया है पर रचना या कला की दृष्टि से समस्या की प्रमुखता कहीं बाधक नहीं बनी है। उपन्यासकार ने अपने कथा संसार के माध्यम से समस्या को प्रस्तुत ही किया है, कहा नहीं है। यहाँ तक की उपन्यास के पात्र भी इस समस्या पर कहीं अपने विचार प्रस्तुत नहीं करते। कथा के पात्र इस समस्या के बीच से गुजरते हैं, इसे जीते हैं, भोगते हैं, अनुभव करते हैं। उपन्यास पढ़ने पर इस बात का बोध होता है कि उपन्यासकार को यह विजन उसके चारों ओर की परिस्थितियों से प्राप्त हुआ होता है। हम जानते हैं कि गिरिराज किशोर आई.आई.टी. कानपुर से सम्बद्ध हैं। यह वस्तुतः उस मानसिकता के विरूद्ध अभियान है जिसके शिकार उच्च वर्ग के बहुसंख्यक लोग हैं। इस मानसिकता का एक रूप वह भी हो सकता है जो उपन्यास में प्रस्तुत है। यदि इस उपन्यास के आईने में हम अपने चेहरे देख सकें और उन्हें पहचान सकें तो सम्भवतः उपन्यास की यह सबसे बड़ी सफलता होगी।

दलितों की जिन्दगी पर आधारित एक महत्वपूर्ण उपन्यास, 'नाच्यो बहुत गोपाल' अमृतलाल नागर ने लिखा है। निस्सन्देह इस जीवन यर्थाथ की गहरी समझ, प्रमाणिक अनुभव, गहन अनुभूति, पात्रों और स्थितियों की जीवन्त सृष्टि, सही शिल्प प्रविधि के चुनाव और भाषा के सर्जनात्मक उपयोग की दृष्टि से 'परिशिष्ट' 'नाच्यो बहुत गोपाल' की अगली कड़ी है। इस उपन्यास के प्रकाशन के साथ गिरिराज किशोर हिन्दी की अगली पंक्ति के उपन्यासकारों के बीच अपनी स्थायी जगह बनाने में सफल हो गये हैं।''

('समीक्षा', वर्ष 18, अंक 4)

आलोचनात्मक मूल्यांकन को निषेधात्मक या नकारात्मक समझने की भूल नहीं करनी चाहिए। आलोचनात्मक मूल्यांकन में पुस्तक की सीमा और विशेषता दोनों का विश्लेषण करना चाहिए। आलोचनात्मक मूल्यांकन करने के क्रम में समीक्षक पुस्तक के केन्द्रीय विषय शिल्प और भाषा की गहरी छानबीन करते हुए अपनी राय देता है। इसके अतिरिक्त वह उस पुस्तक की तुलना उसी विषय पर लिखी गयी दूसरी पुस्तक से भी करता है। उदाहरण के लिए डॉ. गोपाल ने परिशिष्ट का मूल्यांकन करते हुए 'नाच्यो बहुत गोपाल' की भी चर्चा की है। अन्त में, समीक्षक मूल्यांकन संबंधी अपना निष्कर्ष भी प्रस्तुत करता है। कभी–कभी वह यह भार पाठकों पर भी छोड़ देता है।

17.3.4 प्रकाशन संबंधी सूचनाएँ

पुस्तक के प्रकाशन स्तर और प्रकाशन संबंधी सूचनाओं से पाठक को अवगत कराना समीक्षा का दायित्व है। यानी पुस्तक का प्रकाशन कैसा हुआ है, उसके मुद्रण का स्तर क्या है, मूल्य कितना है, आदि प्रूफ संबंधी त्रुटियाँ पाठक को पुस्तक पढ़ने से विरक्त करती हैं। विश्वकोश आदि में तो ये गलतियाँ अक्षम्य हैं।

पुस्तक के प्रकाशन स्तर के साथ–साथ प्रकाशन संबंधी दूसरी जानकारियों से भी पाठक को अवगत कराना चाहिए। इसके अन्तर्गत लेखक का परिचय, अगर अनूदित पुस्तक हो तो अनुवादक का नाम, प्रकाशक का नाम और पता, प्रकाशन वर्ष, पुस्तक का आकार, पृष्ठ संख्या का प्रमाणिक ब्योरा देना चाहिए। ये ब्योरे पादटिप्पणी में दिए जाने चाहिए। समीक्षा लेखन में दोनों ही विधियों का चलन है।

उदाहरण के लिएः

1 पहली विधि

पाद टिप्पणी

1 परिशिष्ट, लेखक–गिरिराज किशोरः प्रकाशक–राजकमल प्रकाशन, 8, नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्लीः प्रथम संस्करण–1984, आकार डिमार्ड, पृ.सं. 308, सजिल्द मूल्य 50. 00

2 दूसरी विधि

पुस्तक की प्रकाशन संबंधी सूचना कहाँ दी जाए, यह उतना महत्वपूर्ण सवाल नहीं है। यह पत्र–पत्रिका में स्थान और उसके गेटअप आदि पर निर्भर करता है। महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रकाशन संबंधी सूचनाएँ तथ्यात्मक और प्रमाणिक हों। विशेषकर, इसका महत्व शोधार्थियों के लिए अधिक है। अगर प्रकाशन संबंधी सूचना में भूल रह गई और शोधार्थी ने अपने शोध में शामिल कर लिया, तो उसका शोध ग्रन्थ त्रुटिपूर्ण हो जाएगा। समीक्षक को इसका ख्याल रखना चाहिए।

नरवानरः शरणकुमार लिंबाले

अनुवादः निशिकांत ठाकुर, प्रकाशकः राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण–2003,पृ.172 मूल्य 150 / –

बोध प्रश्न –2

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) पुस्तक का परिचय देने के क्रम में किन–किन बातों का उल्लेख किया जाता है? किन्हीं तीन के बारे में बताइए।

....

....

....

....

....

2) विषय वस्तु का परिचय देते हुए किन–किन बातों का उल्लेख करना चाहिए? पाँच पंक्तियों में उत्तर लिखिए।

....

....

....

....

....

3) पुस्तक का आलोचनात्मक मूल्यांकन करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए? पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

17.4 एक अच्छे समीक्षक के गुण

आपको एक अच्छा समीक्षक बनना है तो यह जानना जरूरी है कि एक अच्छे समीक्षक में कौन–कौन से गुण होने चाहिए। पहली बात यह कि समीक्षक की भाषा साफ–सुथरी, स्पष्ट और बोधगम्य होनी चाहिए। एक अच्छा समीक्षक बनने के लिए जरूरी है कि आप उसी क्षेत्र या विधा की पुस्तक की समीक्षा करें जिससे आप अच्छी तरह परिचित हों। समीक्षक का सामान्य ज्ञान भी विस्तृत होना चाहिए। समीक्षा लिखते समय समीक्षक को व्यक्तिगत और साहित्यिक पूर्वाग्रहों से मुक्त रहना चाहिए। दृष्टि सम्पन्नता और वस्तुनिष्ठता भी समीक्षक का एक प्रमुख गुण है। उसका लेखन संतुलित होना चाहिए। सामाजिक दायित्व से रहित व्यक्ति अच्छा समीक्षक नहीं हो सकता। आइए, समीक्षक के गुणों पर संक्षेप में विचार करें।

17.4.1 विशेषज्ञता

एक अच्छे और कुशल समीक्षक का पहला काम यह है कि वह उन्हीं पुस्तकों की समीक्षा करे जिनसे वह भली भाँति परिचित हो। अगर आपकी रुचि साहित्य में है तो आप साहित्य की ही समीक्षा करें। अगर आप का क्षेत्र इतिहास है और आप विज्ञान संबंधी पुस्तक की समीक्षा लिखेंगे तो संभव है कि विषय की जानकारी न होने के कारण आप पुस्तक के वास्तविक महत्व को न पहचान पाएँ। इस तरह आप पुस्तक के साथ न्याय नहीं कर सकेगें। अगर आप की रुचि खेल में है और आप कला से संबंधित पुस्तक की समीक्षा करने बैठ गये, तो आप गलत रास्ता अख्तियार करेंगे। एक उदाहरण से यह बात और स्पष्ट हो जाएगी। सुनील गावसकर प्रसिद्ध क्रिकेट खिलाड़ी और खेल विशेषज्ञ हैं। अगर वे क्रिकेट से संबंधित किसी पुस्तक की समीक्षा करेगें, तो एक श्रेष्ठ समीक्षक के रूप में सामने आएगें, लेकिन अगर उन्होने मकबूल फिदा हुसैन की चित्रकला पर लिखी गई पुस्तक की समीक्षा की तो वे असफल समीक्षक ही सिद्ध होगें। इतना ही नहीं अगर वे फुटबॉल या दूसरे किसी खेल की पुस्तक पर समीक्षा लिखेगें तो भी उनकी पकड़ उतनी मजबूत नहीं हो सकेगी। अतः किसी पुस्तक की समीक्षा करने से पूर्व आप अपने को ठोक बजा कर देख लें कि आप उस विषय की जानकारी रखते हैं या नहीं। अगर आप उस विषय में भली भाँति परिचित हैं तो बेहिचक समीक्षा कर्म में प्रवृत हों। इसके अभाव में असफलता ही हाथ लगेगी।

17.4.2 विस्तृत सामान्य ज्ञान

किसी खास क्षेत्र में निपुण होने के साथ–साथ समीक्षक से यह अपेक्षा भी की जाती है कि उसका सामान्य ज्ञान भी विस्तृत हो। इससे समीक्षा समृद्ध होती है। मान लीजिए कि आप खेल के विशेषज्ञ हैं, लेकिन राजनीति की सामान्य जानकारी भी आपको नहीं है तो खेल संबंधी पुस्तक में नस्लवाद्, रंगभेद, खेलों का बहिष्कार आदि प्रसंग आने पर आप उनका महत्व नहीं समझ पाएंगें। इसी प्रकार भारत में जातिवाद पर लिखी किसी समाजशास्त्रीय पुस्तक का मूल्यांकन करने के लिए जाति प्रथा के इतिहास की जानकारी आवश्यक है। वास्तव में ज्ञान के विभिन्न क्षेत्र एक दूसरे से जुड़े हुए और परस्पर निर्भर होते हैं। इसलिए समीक्षक का सामान्य ज्ञान विस्तृत होना आवश्यक है।

17.4.3 पूर्वाग्रहमुक्तता

संतुलित और वैज्ञानिक समीक्षा के लिए समीक्षक का पूर्वाग्रह मुक्त होना भी लाजिमी है पूर्वाग्रह व्यक्तिगत भी हो सकता है और विषयगत भी। व्यक्तिगत पूर्वाग्रह समीक्षा कर्म में बिल्कुल त्याज्य है। व्यक्तिगत मित्रता और विरोध का समीक्षा कर्म से कोई वास्ता नहीं होता। अगर आप किसी व्यक्ति को निजी कारणों से पंसद न करते हों और उसकी पुस्तक प्रशंसनीय है, तो जानबूझकर उसकी निंदा न करें। दूसरी तरफ आपके घनिष्ठ मित्र की पुस्तक आपकी नजर में श्रेष्ठ नहीं है, तो आप बेहिचक उसकी खामियों की ओर इशारा करें। व्यक्तिगत पूर्वाग्रह छोड़े बिना कोई भी व्यक्ति सफल समीक्षक नहीं बन सकता।

पूर्वाग्रह का दूसरा पक्ष आपके निजी मत और मान्यता से संबंधित है। समीक्षा में जबरन अपनी मान्यता को लादने की कोशिश न करें। अगर कोई पुस्तक आपकी मान्यता के विपरीत है, तो आप तर्कसंगत ढंग से उसका विवेचन करें। अगर लेखक की बातों में दम है तो आप उन पर ढंग से विचार करें। समीक्षा कर्म के इसी क्षेत्र में अधिकांश समीक्षक फिसल जाते हैं।

17.4.4 दृष्टि सम्पन्नता

समीक्षक की दृष्टि खुली होनी चाहिए : दृष्टिगत संकीर्णता समीक्षा को कमजोर बनाती है। दृष्टिगत संकीर्णता के मुख्यतः दो कारण हैं– अज्ञान और किसी मतवाद के प्रति आग्रहशील होना। अज्ञानता किसी व्यक्ति के दृष्टिकोण को स्वभावतः संकीर्ण बना देती है। वह अपने अल्प ज्ञान को ही सब कुछ समझता है, और उसकी स्थिति कुएँ के मेंढक के समान हो जाती है। दूसरी ओर अगर कोई व्यक्ति किसी खास विचारधारा में विश्वास रखता है परंतु दूसरों की विचारधारा का सम्मान नहीं करता तो उसके लेखन में वैचारिक पूर्वाग्रह उत्पन्न हो जाएगा। अतः यह आवश्यक है कि समीक्षक को अपना दृष्टिकोण रखते हुए भी उदार और पूर्वाग्रहमुक्त होना चाहिए। एक कुशल समीक्षक को वैचारिक संकीर्णताओं से मुक्त होना पड़ता है और दुनिया में घट रही घटनाओं पर व्यापक दृष्टि डालनी पड़ती है। उसे अपना एक तर्कसंगत दृष्टिकोण भी स्थापित करना होता है। व्यापक दृष्टिकोण को लेकर ही वह किसी पुस्तक की सम्यक् समीक्षा कर सकता है।

17.4.5 वस्तुनिष्ठता

एक अच्छे समीक्षक का दृष्टिकोण वस्तुनिष्ठ होना चाहिए। अपने सभी दुराग्रहों और सभी पूर्वाग्रहों को त्यागकर किसी भी पुस्तक का वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन करना समीक्षक का प्रमुख दायित्व है। वस्तुनिष्ठ समीक्षा में समीक्षक यथासाध्य तटस्थ रहकर पुस्तक का मूल्यांकन करता है और अपने व्यक्तिगत राग–द्वेष से उसे प्रभावित नहीं होने देता। वह पुस्तक के सभी पक्षों को उसके सही परिप्रेक्ष्य में जाँचता परखता है। उसपर आत्मनिष्ठ ढंग से विचार करने के बजाए महत्व के अनुसार विश्लेषण करता है। वस्तुनिष्ठता के बिना समीक्षक पुस्तक को सही परिप्रेक्ष्य में नहीं जाँच सकता। वस्तुनिष्ठ होकर ही पूर्वाग्रहमुक्त और आत्मनिष्ठता से मुक्त हो सकता है।

17.4.6 संतुलित लेखन

समीक्षा में संतुलित लेखन का विशेष महत्व है। इसका संबंध भी पूर्वाग्रहमुक्तता, दृष्टि सम्पन्नता और वस्तुनिष्ठता से है। किसी पुस्तक की अनावश्यक प्रशंसा या निंदा से समीक्षा कर्म में बाधा उत्पन्न होती है। समीक्षक का यह दायित्व है कि वह निष्पक्ष रहकर पुस्तक का आलोचनात्मक मूल्यांकन करे। अगर उसे पुस्तक का कोई पक्ष अच्छा लगता है या कोई बात उसे पसन्द नहीं आती है, तो बिना किसी हिचक के उसे तार्किकता और शिष्टता के साथ अपनी बात कहनी चाहिए। इसके अतिरिक्त उसे पुस्तक के सभी पक्षों, जैसे विषय वस्तु, भाषा, शिल्प आदि का मूल्यांकन प्रस्तुत करना चाहिए। समीक्षक को कभी जान बूझकर किसी पुस्तक की प्रशंसा या निंदा नहीं करनी चाहिए। पुस्तक का सम्यक मूल्यांकन करना एक अच्छे समीक्षक का अपरिहार्य गुण है।

17.4.7 सामाजिक दायित्व बोध

समीक्षक समाज का एक अंग होता है। समाज के प्रति उसका एक दायित्व है। पुस्तकों से पाठकों को परिचित कराना एक सामाजिक कार्य है। इसके माध्यम से वह ज्ञान के क्षेत्र में होने वाली हलचलों से लोगों को परिचित कराता है और उन्हें उनमें शामिल होने के लिए प्रेरित करता है। पुस्तकों को पढ़ने की प्रवृति किसी समाज के सभ्य और सुसंस्कृत होने की निशानी है। इसीलिए पुस्तक समीक्षक का दायित्व बढ़ जाता है। पुस्तकों का चयन करने से लेकर समीक्षा लिखने तक उसे अपने कार्य में

इस सामाजिक पहलू को ध्यान में रखकर चलना चाहिए। उसे यह विचार करना चाहिए कि समाज की उन्नति के लिए किस तरह की पुस्तकों को प्रोत्साहित करना जरुरी है। यह भी कि पुस्तक समीक्षा में कौन से पहलू उभारे जाने चाहिए और मूल्यांकन का आधार क्या होना चाहिए? बेगम अनीसा किदवई की संस्मरणात्मक पुस्तक 'आजादी के छाँव में' स्वतंत्रता प्राप्ति के तत्काल बाद होने वाले दंगों से जुड़े संस्मरणों की उल्लेखनीय किताब है। इस पुस्तक के ऐतिहासिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए निम्नलिखित समीक्षा अंश में कहा गया–

''आजादी के छाँव में' उस भयानक समय की विस्तृत और व्यक्तिगत डायरी है जब विभाजन के समय रोज नये–नये दल आकर दिल्ली में ठहरते थे और आगे पाकिस्तान जाने की राह देखते थे–हर व्यक्ति या परिवार के पीछे आग, अगवा, लूटमार की पृष्ठभूमि थी, या थी वह दहशत, जो इन्हें अपने नये शरणास्थल की ओर धकेल रही थी। उन्हीं राहत कैंपों की प्रामाणिक और झकझोर देने वाली ये डायरियाँ उस काल की विभीषिका का धड़कता दस्तावेज हैं।''

('हंस' अगस्त 1990 में प्रकाशित गिरिराज किशोर की समीक्षा से उद्‌भत)

बोध प्रश्न 3

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) समीक्षक को समीक्षा के लिए अपनी विशेषज्ञता का क्षेत्र ही क्यों चुनना चाहिए? तीन पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

2) समीक्षक की विशेषताएँ बताइए।

....

....

....

....

....

3) सही कथन के आगे (√) का और गलत कथन के आगे (x) का चिह्न लगाएँ

क) अपने पूर्वाग्रहों को त्यागकर समीक्षक कमजोर समीक्षा ही लिख सकता है।

ख) समीक्षक की दृष्टि वस्तुनिष्ठ होनी चाहिए।

ग) सामान्य ज्ञान की जानकारी समीक्षा कर्म में बाधक होती है।

घ) दृष्टिगत संकीर्णता समीक्षक की असफलता की कुंजी है।

17.5 पुस्तक समीक्षा की विशेषताएँ

पुस्तक समीक्षा के विभिन्न पक्षों और एक अच्छे समीक्षक के गुणों की चर्चा पहले की जा चुकी है। पुस्तक समीक्षा की विशेषताएँ इन्हीं से जुड़ी हुई हैं। पुस्तक समीक्षा के विभिन्न पक्षों पर विचार करने के क्रम में आपने अच्छी पुस्तक समीक्षा के उदाहरण भी देखे हैं। एक अच्छे समीक्षक के गुणों का प्रतिफलन अच्छी समीक्षा में होता है। पुस्तक समीक्षा की विशेषताओं को विचार करते समय आप यह महसूस करेंगे कि यहाँ बहुत सी बातें दोहराई गई हैं। मसलन वस्तुनिष्ठता और पूर्वाग्रहमुक्तता जैसे गुणों की चर्चा एक अच्छे समीक्षक के गुण के अन्तर्गत भी हो चुकी है। इसका कारण यह है कि एक अच्छे समीक्षक के प्रयत्नों का परिणाम समीक्षा में झलकता है। इसी कारण इन दोनों गुणों का उल्लेख समीक्षा की विशेषताओं में भी किया गया है।

17.5.1 वस्तुनिष्ठता

एक अच्छी समीक्षा की पहली शर्त है–वस्तुनिष्ठता। पुस्तक समीक्षा पढ़कर पाठक को यह महसूस होना चाहिए कि इसमें पुस्तक के साथ न्याय किया गया है और समीक्षक ने अनावश्यक रूप से भर्त्सना या स्तुति नहीं की है। समीक्षा करते हुए ध्यान रखना चाहिए कि आपकी समीक्षा कहीं पुस्तक का विज्ञापन तो नहीं बन रही है। केवल प्रशंसात्मक, प्रचारात्मक और परिचायात्मक लेखन समीक्षा को विज्ञापन का रूप दे देता है। समीक्षा व्यक्तिगत राग–द्वेष से मुक्त होनी चाहिए और उसमें निहित मूल्यांकन संतुलित होना चाहिए। उदाहरण के तौर पर, आप इस इकाई में दी गयी समीक्षाओं को फिर से पढ़ सकते हैं।

17.5.2 पूर्वाग्रहमुक्तता

पुस्तक समीक्षा की इस विशेषता का उल्लेख एक अच्छे समीक्षक के गुण के अन्तर्गत भी किया जा चुका है। पहले उसका उल्लेख समीक्षक के संदर्भ में किया गया, अब समीक्षा के संदर्भ में किया जा रहा है, हालाँकि दोनों एक दूसरे से अभिन्न हैं। आप जानते हैं कि पुस्तक समीक्षा वस्तुनिष्ठ होनी चाहिए। यह वस्तुनिष्ठता तभी आ सकती है, जब समीक्षा पूर्वाग्रह से मुक्त हो। जैसे कि हम पहले चर्चा कर चुके हैं, पूर्वाग्रह समीक्षक के व्यक्तिगत और विषयगत दोनों ही दृष्टिकोणों से प्रभावित हो सकता है। पाठक को यह नहीं महसूस होना चाहिए कि समीक्षा समीक्षक के पूर्वाग्रहों से ग्रस्त है। समीक्षक को अपनी बात कहने का हक है, पर उसे ऐसा तर्क–संगत और वैज्ञानिक विवेचन के आधार पर करना चाहिए।

17.5.3 प्रासंगिकता

समीक्षा की जीवंतता के लिए उसका प्रासंगिक होना जरूरी है। एक सजग पाठक लगतार नयी पुस्तकों की जानकारी प्राप्त करते रहना चाहता है। अतः नयी पुस्तकों की समीक्षा यथाशीघ्र होनी चाहिए। समीक्षा में विलम्ब होने से उसके अप्रासंगिक हो जाने का खतरा रहता है। देर से प्रकाशित समीक्षाओं में पाठक की रूचि नहीं रह जाती है क्योंकि वह दूसरे स्रोतों से पुस्तक से परिचित हो जाता है। कभी–कभी कोई पुस्तक भी किसी कालखंड में ही प्रासंगिक रहती है। आपातकाल समाप्त होते ही श्री शंकरदयाल सिंह ने 'इमरजेंसी : क्या सच क्या झूठ' नामक पुस्तक लिखी थी। उस समय वह पुस्तक प्रासंगिक थी, आज उसकी प्रासंगिकता शायद उतनी नहीं है। इस पुस्तक पर उस समय लिखी गयी समीक्षा भी प्रासंगिक थी और अब अगर उसी

पुस्तक पर समीक्षा लिखी जाए तो वह उतनी महत्त्वपूर्ण नहीं होगी। कभी–कभी कोई पुस्तक काफी दिनों बाद भी खबरों में आ जाती है। मसलन, पुस्तक विशेष पर कोई पुरस्कार प्राप्त हो या उस पर कोई विवाद उठ खड़ा हो, आदि। इस स्थिति में प्रकाशन के काफी बाद में की गई समीक्षा भी प्रासंगिक हो जाती है। वस्तुतः समीक्षा की प्रासंगिकता पुस्तक की प्रासंगिकता से जुड़ी हुई है।

17.5.4 केंद्रीय बिंदु की पहचान

समीक्षा का मुख्य उद्देश्य पाठक को पुस्तक के मूल कथ्य से परिचित कराना होता है। इसे केंद्रीय विषय, केंद्रीय बिंदु, मुख्य विचार आदि भी कहते हैं। जैसा कि हम पहले भी कह चुके हैं कि पुस्तक का सिर्फ सारांश प्रस्तुत करना समीक्षा नहीं होता। उपन्यास, कहानी, कविता, नाटक में वर्णित कथा को दुहराना भी समीक्षा नहीं है। अच्छी समीक्षा में पुस्तक के केंद्रीय विषय को सहज रूप में उजागर कर दिया जाता है। 'परिशिष्ट' के पीछे उद्धृत समीक्षा पढ़ते हुए आपने महसूस किया होगा कि समीक्षक ने उपन्यास में वर्णित समस्या की ओर पाठक का ध्यान आकृष्ट किया है। उसने उपन्यास की कथा उठाकर समीक्षा में नहीं रख दी है। यह बात पहले भी कही जा चुकी है कि कोई पाठक सिर्फ पुस्तक का सार जानने के लिए समीक्षा नहीं पढ़ता। पाठक समीक्षा के द्वारा पुस्तक की विषय वस्तु के संबंध में समीक्षक की विशेषज्ञतापूर्ण राय जानना चाहता है। इसलिए अच्छी समीक्षा केंद्रीय बिंदु या केंद्रीय कथ्य को उभारने का कार्य करती है।

17.5.5 सोद्देश्यता

पुस्तक समीक्षा पुस्तक और पाठक के बीच पुल का काम करती है। पुस्तक समीक्षा पाठक को पुस्तक से जोड़ती है। पुस्तक समीक्षा के माध्यम से वह पुस्तक से पहला परिचय प्राप्त करता है। वह उसकी विषय वस्तु से परिचित होता है, उसके महत्व और प्रासंगिकता को जानकर यह तय करता है कि उसे यह पुस्तक पढ़नी चाहिए या नहीं। इसलिए यह जरूरी है कि समीक्षा सोद्देश्यपूर्ण हो। समीक्षा लिखते हुए समीक्षक को ध्यान रखना चाहिए कि वह एक दायित्वपूर्ण कार्य कर रहा है। पुस्तक की समीक्षा इस तरह प्रस्तुत करनी चाहिए कि पाठक के सामने सारी तस्वीर स्पष्ट हो जाए। पाठक के मन में यह जिज्ञासा होती है कि पुस्तक का केंद्रीय कथ्य क्या है, उसकी भाषा और शैली कैसी है, लेखक का दृष्टिकोण क्या है, आदि। समीक्षा पाठक की ऐसी जिज्ञासाओं को ध्यान में रखकर लिखी जानी चाहिए, अन्यथा समीक्षा अपना उद्देश्य पूरा नहीं कर सकेगी, पाठक समीक्षा से निराश होगा और उसकी उपयोगिता पर प्रश्न चिह्न लग जाएगा।

17.5.6 निजता

प्रत्येक समीक्षक का दृष्टिकोण और उसकी लेखन शैली अलग–अलग होती है। इसकी झलक भी समीक्षा में मिलती है। समीक्षक की विश्लेषण क्षमता के कारण भी समीक्षाओं का स्वरूप अलग–अलग हो जाता है। लेखन की यह निजता समीक्षा का खास गुण है। प्रत्येक नए समीक्षक को अपने में यह गुण विकसित करना चाहिए। लेकिन निजता के नाम पर दुरूहता, अत्यधिक विद्वता या गुरुडम पाठक पसंद नहीं करता। समीक्षा में स्पष्टता और सहजता पसंद की जाती है। पुस्तक समीक्षा आलोचना का प्रथम चरण है। उसमें बहुत गम्भीर होने या अपने मत को बहुत दृढ़ता और विस्तार से प्रस्तुत करने की खास आवश्यकता के लिए आलोचना या निबंध में ज्यादा अवकाश रहता है।

17.5.7 भाषा और शैलीगत विशेषताएँ

समीक्षा की भाषा सहज, सरल और समूह में चलने लायक होनी चाहिए। समीक्षा का उद्देश्य होता है पाठकों को पुस्तक की जानकारी देना। इसलिए समीक्षा में भाषा का दुरूहपन ठीक नहीं है। कठिन और दुरूह भाषा में पाठक उलझकर रह जाता है और पुस्तक की सही जानकारी हासिल करने में उसे कठिनाई महसूस होती है। समीक्षा की भाषा के साथ–साथ उसकी शैली भी सुपाठ्य और आकृष्ट करने वाली होनी चाहिए। समीक्षा का लेखन और विश्लेषण इस ढंग का होना चाहिए कि पाठक शुरू से लेकर अंत तक समीक्षा पढ़ने को बाध्य हो जाय और पूरी तस्वीर उसके सामने स्पष्ट हो जाए। लेखन शैली की यह परिपक्वता समीक्षक के विस्तृत ज्ञान और प्रस्तुति की कुशल क्षमता पर निर्भर होती है। समीक्षक तर्कसंगत ढंग से चरण–दर–चरण पुस्तक का विश्लेषण कर अपनी शैली को आर्कषक और सम्प्रेष्य बना सकता है। समीक्षा जितनी अधिक सहज और सम्प्रेष्य होगी, उसकी महत्ता उतनी ज्यादा होगी। भाषा और शैली की दुरूहता में जकड़ी समीक्षा कभी भी श्रेष्ठ समीक्षा नहीं हो सकती। समीक्षा भाषा–शैली का निम्नलिखित उदाहरण देखिए–

''सत्येन के इन दोनों संग्रहों में दो तरह की कहानियाँ हैं––लंबी और छोटी। मुझे चार लंबी और चार छोटी कहानियाँ अच्छी लगीं। इसलिए कि मैंने इन्हें एकाधिकबार पढ़ा है और मैं समझता हूँ कि जो कहानी पाठक को याद रहती है या हांट करती है अथवा पुनः पढ़ने को उकसाती है और दोबारा पढ़ने पर नया रस देती हैं, वही मूल्यवान भी है। पचास साठ वर्षों से निरंतर कहानियाँ पढ़ते और उनमें रस पाते हुए बेगिनती कहानियों के नाम या कथानक मेरे दिमाग में सुरक्षित हैं। लेकिन ऐसी कहानियाँ बहुत ही कम हैं। जिन्हें बार–बार पढ़ने की इच्छा हो। सत्येन की यहाँ चंद ऐसी कहानियाँ हैं यह बात उसके कथाकार के सामर्थ्य की द्योतक है (सत्येन कुमार के दो कहानी संग्रहों पर लिखी उपेन्द्रनाथ अश्क की समीक्षा का अंश, हंस जनवरी 1989 से उद्धृत)''

17.6 पत्र–पत्रिकाओं की समीक्षा

पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश करते ही आपकी मुलाकात पत्र–पत्रिकाओं की समीक्षा से भी हो सकती है। आप किसी अखबार के दफ्तर में जाएँ और संपादक आपको कहे कि आपने इस महीने जो पत्रिकाएँ पढ़ी हैं या कुछ पत्रिकाओं के विशेषांक छपे हैं, उन पर एक समीक्षात्मक लेख लिखकर लाएँ। हाल के वर्षों में साहित्यिक पत्रिकाओं की संख्या काफी बढ़ी है और विशेषांक निकालने का चलन शुरू हुआ है। इसलिए उनकी समीक्षाएँ भी छपने लगी हैं।

पत्र–पत्रिकाएँ तो आप पढ़ते ही होंगे। इनमें से कोई एक पत्रिका उठाइए और पढ़ डालिए। पत्रिका पढ़ने के बाद पहली प्रतिक्रिया लिख लीजिए। आपको जो–जो रचनाएँ अच्छी लगीं, बुरी लगीं, सामान्य लगीं, उसके कारण लिखना जरूरी है। केवल अच्छा, बुरा, सामान्य कहने से आपकी टिप्पणी और सम्मति विश्वसनीय नहीं बन पाएगी।

समाचार पत्र में विश्वसनीयता का विशेष महत्व है। इससे समाचार पत्र की साख बनती या बिगड़ती है। आपकी प्रतिक्रिया से हजारों–लाखों पाठक प्रभावित होते हैं। इससे पत्रिका की बिक्री पर भी असर पड़ता है।

पत्रिका की समीक्षा और पुस्तक समीक्षा में कोई बुनियादी फर्क नहीं है। मसलन, जिस प्रकार पुस्तक समीक्षा लिखते समय आप पहले पुस्तक के लेखक परिचय से आगे बढ़ते हुए विवेचन, विश्लेषण और मूल्यांकन की ओर जाते हैं वही विधि पत्रिका की समीक्षा करते समय अपनानी पड़ती है। पत्रिका के कलेवर, उसके लेखों, कहानियों, कविताओं आदि में संपादक की दृष्टि और परख के साथ–साथ सम्मिलित रचनाओं की भी समीक्षा प्रस्तुत की जाती है। विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में छपे संपादक के नाम पाठकों के पत्र आप पढ़ें––इसके लिए यहाँ एक छोटा उदाहरण दिया जा रहा है, पर विस्तार के लिए आप 'हंस', 'वागर्थ', 'समकालीन भारतीय साहित्य', 'वर्तमान साहित्य', 'पहल' 'आलोचना', 'बसुधा', 'तद्भव' और 'कथादेश' जैसी पत्रिकाओं के अंक निकाल कर देख सकते हैं।

'वर्तमान साहित्य' का हर अंक उपलब्धि परक होता है। साहित्य, कला, और सोच की इस पत्रिका में साहित्य और सोच अपने विशिष्ट रंग–रूपों में है। लेकिन नाटक और सिनेमा तथा दूसरी कला विधाओं पर सामग्री नदारद है। (वर्तमान साहित्य : अगस्त, 2005 अंक में केशव शरण, वाराणसी का पाठक–मंच में शामिल पत्र से उद्धृत)।

कहने का तात्पर्य यह कि समाचार पत्र पढ़नेवाले पाठक को विभिन्न पत्रिकाओं की जानकारी देना और उनकी गुणवत्ता और सीमाओं से पाठक को रू–ब–रू कराना पत्रिका समीक्षा का लक्ष्य भी है और उत्तरदायित्व भी। इसे लिखने के लिए समीक्षा और समीक्षक के उन्हीं गुणों को अपनाइए। जिनका जिक्र हम इसी इकाई के भाग 17. 3, 17.4, 17.5, में कर आए हैं। इसलिए फिर से उन विशेषताओं को यहाँ दोहराया नहीं जा रहा है।

समाचार–पत्र में छपने वाली पत्रिका समीक्षाओं का कॉलम सूचनात्मक होता है। समाचार–पत्र में छपने वाली समीक्षाएँ सूचनात्मक और कभी–कभी सनसनी फैलानेवाली होती हैं। अखबार में समीक्षा छापने का प्रमुख उद्देश्य होता है–प्रचार। एक अखबार को रोज चालीस–पचास हजार लोग जरूर पढ़ते हैं। लेकिन समाचारों और सूचनाओं पर सरसरी निगाह डालते हुए आगे बढ़ जाते हैं। उनके पास विस्तृत समीक्षा पढ़ने का समय नहीं होता। सुबह का समय होता है, दफ्तर की हड़बड़ी होती है। इसलिए ज्यादा समीक्षाएँ रविवार को निकलती हैं। लेकिन यह कोई नियम नहीं है। हर अखबार अपनी योजना खुद तैयार करता है।

समीक्षा लिखने के लिए यह जरूरी है कि आप जानें कि आपका पाठक वर्ग कौन है। मसलन, यदि आप 'आलोचना' जैसी पत्रिका के लिए कोई पुस्तक समीक्षा लिख रहे हैं तो निश्चित रूप से इसमें विवेचन, विश्लेषण और मूल्यांकन पर ज्यादा जोर देना होगा लेकिन जब 'इंडिया टुडे' और 'आउटलुक' जैसी पत्रिकाओं और 'जनसत्ता', 'राष्ट्रीय सहारा', 'दैनिक जागरण' जैसे समाचार पत्रों के लिए समीक्षा लिख रहे होगें तो आपको समीक्षा खबर में तब्दील करनी होगी और इसकी प्रस्तुति रोचक, संगुफित और सूचनात्मक बनानी होगी। अखबार में साहित्य कम जगह पाता है। अतः इसमें समीक्षा लिखने वालों को गागर में सागर भरने की कला आनी चाहिए।

बोध प्रश्न 4

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) एक अच्छी समीक्षा को वस्तुनिष्ठ और पूर्वाग्रहमुक्त क्यों होना चाहिए? सही उत्तर के सामने (√) का चिन्ह लगाएँ :

क) वस्तुनिष्ठ और पूर्वाग्रहमुक्त हुए बिना भी अच्छी समीक्षा लिखी जा सकती है। ( )

ख) पुस्तक का संतुलित विवेचन हो, इसलिए समीक्षा का वस्तुनिष्ठ और पूर्वाग्रह रहित होना जरूरी है। ( )

ग) वस्तुनिष्ठ और पूर्वाग्रह रहित समीक्षा कमजोर मानी जाती है। ( )

घ) उपर्युक्त कोई उत्तर सही नहीं है। ( )

2) समीक्षा की प्रसंगिकता से आप क्या समझते हैं। दो पंक्तियों में उत्तर दें।

....

....

....

....

....

3) केंद्रीय बिंदु की पहचान न कर पाने से समीक्षा में क्या खतरा रहता है, सही उत्तर के सामने सही (√) का और गलत उत्तर के सामने (x) का चिन्ह लगाएँ।

क) समीक्षा पुस्तक का सारांश बन जाती है। ( )

ख) पुस्तक का सम्यक मूल्यांकन हो जाता है। ( )

ग) समीक्षा में पुस्तक की विषय वस्तु का सही मूल्यांकन नहीं हो पाता। ( )

घ) केंद्रीय बिंदु को पहचानने या न पहचानने से समीक्षा में कोई फर्क नहीं पड़ता। ( )

4) समीक्षा की भाषा और शैली कैसी होनी चाहिए? पाँच पंक्तियों में उत्तर दें।

....

....

....

....

....

17.7 सारांश

- इस इकाई में आपने समीक्षा के विभिन्न पक्षों की सैद्धांतिक जानकारी प्राप्त की। अब आप समीक्षा का अर्थ, समीक्षा और आलोचना में अंतर, समीक्षा की विशेषताएँ और एक अच्छे समीक्षक के गुणों से अवगत हो गये हैं।
- पुस्तक समीक्षा में पुस्तक का परिचय और मुल्यांकन प्रस्तुत किया जाता है। पुस्तक समीक्षा और आलोचना आपस में जुड़ी हैं, पर परिभाषा की दृष्टि से उनमें अंतर है। पुस्तक समीक्षा और आलोचना का मूल अंतर यह है कि समीक्षा में जहाँ पुस्तक केन्द्र में होती है, वहीं आलोचना में पुस्तक संदर्भ के रूप में शामिल की जाती है।

- अच्छा समीक्षक अपनी विशेषज्ञता के क्षेत्र में ही हाथ डालता है। उसका लेखन संतुलित होता है, क्योंकि वह पूर्वाग्रह से ग्रस्त नहीं होता और उसकी दृष्टि वस्तुनिष्ठ होती है।
- अच्छी समीक्षा के प्रमुख गुण हैं––वस्तुनिष्ठता, पूर्वाग्रहरहित होना, प्रासंगिकता, केन्द्रीय बिंदु को पहचानना और सरल भाषा–शैली का प्रयोग।

अभ्यास

1) किसी पुस्तक का परिचय दीजिए जिनमें पुस्तक के लेखक, विषय और विधा का उल्लेख हो। उत्तर लगभग दस पंक्तियों में लिखें।

....

....

....

....

....

2) किसी पठित पुस्तक में जो आपके पास उपलब्ध हो उसमें दी गयी प्रकाशन संबंधी सूचनाएँ नोट करें।

....

....

....

....

....

3) किसी पठित पुस्तक पर प्रकाशित समीक्षा पढ़कर इकाई में बताई गयी विशेषताओं के आधार पर उसका मूल्यांकन कीजिए।

....

....

....

....

....

4) उपर्युक्त पुस्तक की समीक्षा स्वयं लिखने का प्रयास कीजिए।

....

....

....

....

....

17.8 बोध प्रश्नों / अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) पुस्तक समीक्षा में पुस्तक की विषय वस्तु का संक्षिप्त परिचय देते हुए उसके विभिन्न पक्षों को प्रस्तुत किया जाता है। देखें उपभाग 17.2

2) क) x   ख) √   ग) x   घ) √

3) पुस्तक समीक्षा पाठक समुदाय से पुस्तक का परिचय कराती है। साथ ही पुस्तक का संक्षिप्त परंतु समग्र मूल्यांकन भी करती है। विस्तृत उत्तर के लिए इकाई का अध्ययन करें।

बोध प्रश्न–2

1) क) पुस्तक का सामान्य परिचय

   ख) लेखक का संक्षिप्त परिचय

   ग) पुस्तक के विषय वस्तु का संकेत

2) द्रष्टव्य, उपभाग 17.3.2 का प्रथम पैराग्राफ

3) मूल्यांकन संतुलित हो, पूर्वग्रह–मुक्त हो, तर्क–संगत हो, आदि। देखें उपभाग 17. 3.3

बोध प्रश्न 3

1) समीक्षक अपनी विशेषज्ञता के आधार पर पुस्तक का सही मूल्यांकन कर सकता है।

देखें 17.4.1

2) इकाई के अध्ययन के पश्चात् स्वयं उत्तर लिखें।

3) क) √   ख) x   ग) √   घ) x

बोध प्रश्न–4

1) क) x   ख) √   ग) x   घ) x

2) स्वयं लिखें।

3) क) √   ख) x   ग) √   घ) x

4) स्वयं लिखें।

अभ्यास

इकाई के गहन अध्ययन के पश्चात दिए गए प्रश्नों के उत्तर स्वयं लिखें।